1

यीशु मसीहा की वंशावली

(1:1-17)

मत्ती (1:1-17) की आरम्भिक आयतों को आम तौर पर बाइबल की व्यर्थ आयतें माना जाता है। कुछ छात्र अनावश्यक मानते हुए उन्हें छोड़ देने को प्राथमिकता देंगे। सुसमाचार के अपने विवरण में मत्ती ने उन्हें क्यों डाला और उनका क्या उद्देश्य है? आम तौर पर बाइबल में वंशावलियां वंश को साबित करने के लिए दी जाती थीं। डग्लस एस. हफ़मैन ने इसकी व्याख्या की, ''वंशावली के साथ यीशु के जीवन के उसके विवरण का आरम्भ [पुराने नियम] के नूह और अब्राहम के विवरणों की तरह ही है, जिनमें दोनों में पहले वंशावलियां दी गई थीं (उत्पत्ति 5:1-32 और 11:10-32, क्रमशः)''।[1]

वंशावलियों से परिवार के सम्बन्ध तय होते हैं, इस कारण वे हमेशा कालक्रम के अनुसार नहीं होती, नाम छूट सकते हैं (1:8, 11 पर टिप्पणियां देखें)। ऐसी चूक बाइबल के लेखकों में आम पाई जाती है। शायद कुछ पीढ़ियों को लेख में एक विशेष संख्या तक पहुंचने या किसी विशेष व्यक्ति का उल्लेख करने की आवश्यकता न होने के कारण छोड़ दिया गया। सम्बन्ध स्थापित करने के लिए वंशावलियों का पूर्ण होना आवश्यक नहीं था।

यहूदी लोग कनान देश में अपनी विरासत को पाने के लिए अपने परिवार की विरासत को साबित करने के लिए वंशावलियों का इस्तेमाल करते थे (गिनती 26:52-56)। बाबुल की दासता के बाद यरूशलेम में लौट आने वाले कुछ याजक ''अपने वंश के नाम लिखवाने'' में अपने परिवार के सम्बन्ध को नहीं ढूंढ पाए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि ''उन्हें अशुद्ध माना गया और याजकाई में से निकाल दिया गया'' (एज्रा 2:61, 62)। इस मामले में उनकी वंशावलियां उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण थीं।

हेरोदेस महान, जो एदोमी था, एक और व्यक्ति था जिसके लिए वंशावली का महत्व था। वह ''यहूदियों के राजा'' के रूप में पहचाना जाने का इच्छुक था और उसने अपने सिंहासन के लिए किसी प्रकार के मुकाबले को सहन नहीं किया। अपने रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति को जिसमें उसकी अपनी पत्नी, पत्नी के दो भाई और उसके अपने दोनों बेटे थे, मरवा दिए। अगस्तुस कैसर के बारे में कहा गया, ''उसका बेटा होने से अच्छा हेरोदेस का सूअर होना अच्छा है।''[2] हेरोदेस यहूदी धर्म को मानता था इस कारण उसने सूअर को नहीं मारना था; परन्तु स्पष्टतया अपने दो बेटों की हत्या पर उसका विवेक नहीं जागा। जूलियस अफ्रिकनुस के अनुसार हेरोदेस ने अपने दावे को सुरक्षित रखने के लिए वंशावली के दस्तावेज नष्ट कर दिए,[3] और अपने पक्ष में इतिहास दोबारा लिखवाया। यह वही राजा था जिसने पूर्व से मसीह को दण्डवत करने के लिए आए पण्डितों से धोखा खाने के बाद, ''ज्योतिषियों द्वारा ठीक ठीक बताए गए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस पास के स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष के या उससे छोटे थे''

मार डालने का आदेश दिया था (2:16)।

ऊपर दी गई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विपरीत मत्ती ने सुसमाचार का अपना विवरण लिखा। एक प्रसिद्ध विचार पाया जाता है कि मत्ती की वंशावली यीशु के सांसारिक पिता यूसुफ़ के और लूका 3:23-38 में वर्णित यूसुफ़ से मरियम के परिवार में से मिलती है। ऐसा होने पर, लूका मरियम के द्वारा यीशु के स्वाभाविक परिवार की सूची देता है और मत्ती यूसुफ़ के गोद लिए पुत्र के रूप में उसकी शाही (या कानूनी) वंशावली देता है।[4] मत्ती के लिए यह साबित करना बड़ा ही आवश्यक था कि यीशु ''दाऊद की सन्तान'' था और इस कारण इस्राएल के सिंहासन का सही वारिस भी (1:1)। नातान भविष्यवक्ता के द्वारा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह दाऊद के परिवार के द्वारा मसीहा को संसार में लेकर आएगा (2 शमूएल 7:12-16)।

वंशावलियों में अन्तर

मत्ती की वंशावली (मत्ती 1:1-17)	*लूका की वंशावली (लूका 3:23-38)*
1. पुस्तक के आरम्भ में दी गई	1. यीशु के बपतिस्मे के बाद दी गई
2. तीन विभाजन (14+14+14)	2. कोई विभाजन नहीं
3. अब्राहम से यीशु तक	3. यीशु से आदम/परमेश्वर तक
4. ''की सन्तान'' (का पिता)	4. ''का पुत्र'' (वंशज)
5. स्त्रियों, भाइयों का नाम दिया गया	5. केवल पूर्वजों का नाम दिया गया
6. दाऊद के पुत्र सुलेमान के द्वारा वंशावली	6. दाऊद के पुत्र नातान के द्वारा वंशावली

परिचय (1:1)

[1]अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान यीशु मसीह की वंशावली।

आयत 1. पहली आयत आगे दी गई वंशावली के परिचय का काम करती है। **की वंशावली** (*biblos geneseōs*) अभिव्यक्ति का अर्थ ''उत्पत्ति, या मूल की पुस्तक'' है। यह वाक्यांश मत्ती की पूरी पुस्तक के लिए हो सकता है पर अधिक सम्भावना केवल वंशावली की लगती है, ''जैसा कि अधिकतर विद्वानों का मत है।''[5] यह तथ्य कि सप्तत्ति की वंशावलियों में *जैनिसिस* शब्द बार-बार आता है, इस निष्कर्ष का समर्थन करता है (देखें उत्पत्ति 5:1; 6:9; 10:1, 32; 11:10, 27)।

यह वंशावली **यीशु मसीह** की है। डोनल्ड ए. हैग्नर का मूल्यांकन है, ''यह ध्यान देना आवश्यक है कि [पुराने नियम] और यहूदी परम्परा में वंशावलियां में नाम हमेशा सूची के पहले नाम अर्थात मल पुरुष से लिया जाता है। परन्तु यहां वंशावली सूची के अतिन्म व्यक्ति के अनुसार बनाई गई है।''[6] यह विशेषता यीशु के बड़े महत्व पर ज़ोर देती है।

यूनानी भाषा में मसीह को ''ख्रिस्तुस'' (*Christos*) कहा जाता है जिसका अर्थ

''अभिषिक्त'' है और यह इब्रानी भाषा के ''मसीहा'' (*Mashiach*) का समानान्तर है। NASB में *ख्रिस्तोस* का अनुवाद ''मसीहा'' केवल कुछ बार ही किया गया है (1:1, 16, 17; 2:4; यूहन्ना 1:41; 4:25)। यीशु के लिए मूल में ''ख्रिस्तुस'' ही इस्तेमाल होता था पर समय के साथ यह उसके नाम के साथ जुड़ गया।

आयत 1 यीशु मसीह की वंशावली के मुख्य लोगों को प्रकाशमान करती है (1:17 पर टिप्पणियां देखें)। **दाऊद की सन्तान** वाक्यांश यह दिखाते हुए कि परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया, दाऊद की वंशावली में यीशु की जड़ों को मज़बूत करता है। 2 शमूएल 7:12 में यहोवा ने दाऊद को बताया था कि वह ''[उसके वंश की] राजगद्दी सर्वदा बनाए रखेगा'' (देखें भजन संहिता 89:29; 132:11; लूका 1:32; प्रेरितों 2:30-36)। सुसमाचार के मत्ती के विवरण में ''दाऊद की सन्तान'' का इस्तेमाल यीशु के लिए मसीहा के पद के रूप में आम तौर पर हुआ है (9:27; 12:23; 15:22; 20:30, 31; 21:9, 15; 22:42)। ''दाऊद के वंश के रूप में वह कब्जा करने वाला नहीं, बल्कि परमेश्वर के लोगों का वैद्य हाकिम है।''[7]

यीशु को **अब्राहम की सन्तान** भी कहा गया है। लियोन मौरिस ने टिप्पणी की है:

> परमेश्वर के अब्राहम के साथ बांधी गई वाचा के कारण ही इस्राएल को परमेश्वर के लोगों के रूप में विशेष अर्थ में अलग किया गया था (उत्पत्ति 12:2-3; 15:17-21; 17:1-14)। सब इस्राएली उस महान पुरखे की सन्तान होने पर गर्व करते थे और मसीही लोग विशेषकर विश्वास करने वाले के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में उसे पसन्द करते थे (पौलुस रोमियों की पुस्तक में विशेषकर इस बात को सामने लाता है)।[8]

यह विवरण यीशु को न केवल पिता अब्राहम तक वापस ले जाकर इस्राएल की वंशावली में रखता है बल्कि यह इस बात को भी दिखाता है कि वह अब्राहम के साथ की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का पूरा होना है। प्रभु ने अब्राहम से कहा था, ''और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे'' (उत्पत्ति 12:3)। बाद में उसने कहा, ''पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी'' (उत्पत्ति 22:18)। पौलुस ने समझाया कि मसीह अब्राहम का वह ''वंश'' है (गलातियों 3:16)। उसी के द्वारा वास्तव में सब जातियों को आशीष मिलती है (देखें 28:18-20)।

पुरखे (1:2-6क)

[2]अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए। [3]यहूदा और तामार से फिरिस व जोरह उत्पन्न हुए। फिरिस से हिस्त्रोन उत्पन्न हुआ, और हिस्त्रोन से एराम उत्पन्न हुआ। [4]एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ, और अम्मीनादाब से नहशोन और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। [5]और सलमोन और राहब से बोअज उत्पन्न हुआ। बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। [6क]और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ।

वंशावली के पहले भाग (1:2-6क) में अब्राहम से आरम्भ करते हुए दाऊद तक इस्राएल

के पुरखाओं के नाम दिए गए हैं। यह पुराने नियम में पाए जानी वाली वंशावलियों के साथ मेल खाता था (रूत 4:18-22; 1 इतिहास 1:28, 34; 2:1-15)।

आयत 2. अब्राहम को कसदियों के ऊर से कनान देश में जाने के लिए बुलाया गया था (उत्पत्ति 15:7; 24:7; प्रेरितों 7:2-4)। उसकी सन्तान के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल जाति को बनाना था; और इस्राएल जाति में से मसीह ने अर्थात संसार के उद्धारकर्त्ता ने आना था।

इसहाक ही वह पुत्र था जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से उसके बुढ़ापे में की थी (उत्पत्ति 15:4; 21:1-3)। ईश्वरीय प्रतिज्ञाएं इश्माइल के द्वारा नहीं बल्कि इसहाक (उत्पत्ति 16:1-16; 17:15-22) के द्वारा ही पूरी होनी थी।

इसहाक दो लड़कों, एसाव और **याकूब** का पिता था। याकूब चाहे पहलौठा नहीं था, पर अपनी वाचा के लोग बनाने के लिए परमेश्वर ने उसी को चुना था (उत्पत्ति 25:23)।

याकूब के बारह बेटे थे, जिनमें से एक का नाम **यहूदा** था। याकूब ने भविष्यवाणी की कि यहूदा राजकीय गोत्र होगा: ''यहूदा सिंह का डांवरू है। ... जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा; और राज्य-राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे'' (उत्पत्ति 49:9, 10)। राजा दाऊद (1:6क) और उसकी सन्तान जो वंशावली के दूसरे समूह में हैं (1:6ख-11), सब यहूदा की सन्तान थे। अन्त में यीशु है ''... यहूदा के गोत्र का ... सिंह, जो दाऊद का मूल है'' (प्रकाशितवाक्य 5:5)।

और उसके भाई वाक्यांश वंशावली में मिल सकता है ''क्योंकि सभी बारह पुरखाओं के इकट्ठे बात करना आम था या क्योंकि सभी बारह गोत्रों के वंश इस्राएली थे और सब की मसीहा में एक जैसी दिलचस्पी होनी थी।''[9] एक और विश्वसनीय व्याख्या के अनुसार, यह वाक्यांश ''शाही परिवार के कई सम्भावित वंशजों में से केवल यहूदा ही चुने जाने (उत्पत्ति 49:10)'' का संकेत देता है।[10]

आयत 3. यहूदा और तामार से फिरिस और जोरह उत्पन्न हुए। यह तथ्य कि फिरिस और जोरह दोनों का उल्लेख है सम्भवतया उनके गर्भ में आने की विलक्षण परिस्थितियों का संकेत देता है। यहूदा ने विधवा से विवाह की परम्परा के अनुसार अपनी बहु तामार के साथ उचित व्यवहार नहीं किया था, इस कारण उसने वेश्या का लिबास पहनकर उसे फुसलवाया था जिससे यहूदा जुड़वां बेटों का पिता बन गया (उत्पत्ति 38:1-30)।

यीशु की वंशावली में तामार पांच स्त्रियों में सबसे पहली और मरियम अन्तिम है (1:3, 5, 6, 16)।[11] पहली चार स्त्रियां तामार, राहाब, रूत और बतशेबा के जीवन में विलक्षण परिस्थितियां रहीं। हफ़मैन ने लिखा है, ''प्रत्येक अपने पुरुष साथी के साथ मेल पर कोई न कोई विचित्र या असाधारण बल्कि अपमानजनक घटना घटी और प्रत्येक ने परमेश्वर की योजना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (किसी ने अपनी ओर से पहल करके और अधिकतर बड़ा व्यक्तिगत जोखिम लेकर)।''[12] प्रत्येक के मामले में उनका ''दाग बाद में मिट गया।''[13]

सम्भव है कि चारों स्त्रियों में किसी न किसी प्रकार मरियम की विलक्षण भूमिका की परछाईं हो। फरीसियों की परम्परा और मसीहा की उम्मीद में उन्हें महिमा दी गई थी, इस कारण मत्ती ने यहूदी अगुओं के यीशु को ठुकराने के विरुद्ध तर्क देने अर्थात उसके जन्म के आस पास की परिस्थितियों पर किसी भी आपत्ति का जवाब देने के लिए उन्हें इस्तेमाल किया।[14] यह भी हो

सकता है कि इन चारों स्त्रियों का अन्यजाति होना मसीह के मिशन के सब जातियों के लिए होने की ओर संकेत करता है।

जुड़वां लड़कों में से पहलौठा **फिरिस** वह बेटा था जिसमें से दाऊद की शाही परिवार रेखा बनना था (रूत 4:12, 18-22)। वह **हिस्रोन** का पिता था जो याकूब की सन्तान में मिस्र में जाने वालों में से था (उत्पत्ति 46:8, 12)। उसका बेटा **राम** मिस्र में जन्मा होगा।

आयत 4. अधिक सम्भावना है कि **राम** और **अम्मीनादाब** में कई पीढ़ियों का अन्तर हो जो मिस्र में इस्राएल के 430 साल की व्याख्या करने में सहायक होगा (निर्गमन 12:40, 41)। लूका ने उस काल के दौरान कम से कम एक वंशावली की झलक देते हुए "अदमीन" नाम देते हुए शामिल किया (लूका 3:33; NASB) अम्मीनादाब हारून का ससुर था (निर्गमन 6:23) जो इस्राएल का महायाजक बना।

अम्मीनादाब का पुत्र **नहशोन** मिस्र से कूच के समय यहूदा के गोत्र का अगुआ था (गिनती 2:3, 4)। वह पहली जनगणना में शामिल था (गिनती 1:7), नये बने तम्बू में बलिदान लेकर आया था (गिनती 7:12-17) और जंगल में घूमने के समय एक नई जगह बनाने के समय उसने अपने गोत्र की अगुआई की थी (गिनती 10:14)।

नहशोन का पुत्र **सलमोन** स्पष्टतया यहोशू की अगुआई में कनान के युद्ध में लड़ा था। आयतें 3 और 4 वाले कई लोगों की तरह, उसके बारे में पुराने नियम में बहुत कम कहा गया है।

आयत 5. सलमोन और राहब से बोअज उत्पन्न हुआ। हमले के समय यरीहो में वेश्या राहब ने इस्राएली जासूसों को छुपा दिया था, जबकि उन्हें पकड़कर मारा जा सकता था (यहोशू 2:1-7)। उसने उनके प्राण बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी थी। इस्राएल द्वारा यरीहो पर कब्जा करने के समय उसे और उसके परिवार को परमेश्वर में उसके विश्वास के कारण छोड़ दिया गया था (इब्रानियों 11:31; याकूब 2:25)। बाद में उसने सलमोन से विवाह कर लिया जो एक इस्राएली था और उनका एक बेटा था जिसका नाम उन्होंने बोअज़ रखा (रूत 4:20, 21)।

बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ। यह अद्‌भुत कहानी रूत की पुस्तक में बताई गई है। बैतलहम के एक प्रमुख नागरिक बोअज ने रूत नामक एक निर्धन, विधवा रिश्तेदार पर तरस खाया। रूत ने बोअज के पास विवाह का प्रस्ताव रखने के लिए उसकी दहलीज में जाने का व्यक्तिगत जोखिम उठाया (रूत 3:6-14)। बाद में उसने ओबेद को जन्म देकर दाऊद की परिवार रेखा को आगे बढ़ाया (रूत 4:1-17)। मरियम तक ले जाने वाली चार स्त्रियों की सूची में केवल रूत को ही निष्कलंक स्त्री कहा जा सकता है। वह "भली स्त्री है" (रूत 3:11), चाहे वह मूर्तिपूजक मुआबियों में से ही थी (देखें व्यवस्थाविवरण 23:3)।

ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ [था]। स्पष्टतया ओबेद और यिशै के बीच कई पीढ़ियों को छोड़ दिया गया है, जो न्यायियों के काल में कुछ सौ वर्षों का वर्णन करतीं (न्यायियों 11:26; 1 राजाओं 6:1)। यिशै, जिसके आठ बेटे थे, बैतलहम में रहता था और उसका भेड़ों का झुण्ड था (1 शमूएल 16:1-13; 17:12-18)।

आयत 6क. पिशै के सबसे छोटे पुत्र **दाऊद** को परमेश्वर द्वारा चुना गया था और भविष्यवक्ता शमूएल द्वारा अभिषेक किया गया (1 शमूएल 16:11-13)। वंशावली में केवल

उसे अकेले को **राजा** बताया गया है, चाहे अगले समूह में लोग राजा थे (1:6ख-11)। परिचय कथन के साथ मेल खाते हुए साहित्य की यह बात (1:1) राजा दाऊद और मसीहा के बीच एक मज़बूत बन्धन बनाती है (1:16, 17)। इसलिए दाऊद ''यीशु के आदिरूप'' का काम करता है।[15]

दाऊद सरीखे राजा (1:6ख-11)

[6ख]दाऊद से सुलैमान बतशेबा से उत्पन्न हुआ जो पहिले उरिय्याह की पत्नी थी, [7]सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ, रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ और अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ, [8]आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ; और यहोशाफात से योराम उत्पन्न हुआ, और योराम से उज्जियाह उत्पन्न हुआ। [9]उज्जियाह से योताम उत्पन्न हुआ, योताम से आहाज उत्पन्न हुआ; और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ। [10]हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुआ, और मनश्शिह से आमोन उत्पन्न हुआ, और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ। [11]और बंदी होकर बाबुल जाने के समय में योशिय्याह से यकुन्याह और उस के भाई उत्पन्न हुए।

नामों के दूसरे समूह में (1:6ख-11) दाऊद के वंश से राजाओं की सूची है। सुलैमान से यकन्नया तक ''शान के बढ़ने और राजवंश के घटने'' की बात है।[16]

आयत 6ख. दाऊद से सुलैमान बतशेबा से उत्पन्न हुआ जो पहले उरिय्याह की पत्नी थी। यूनानी धर्मशास्त्र अधिक अक्षरश: इस प्रकार है, ''दाऊद [उस] से जो उरिय्याह की थी सुलैमान का पिता था।'' इसमें ''न तो बतशेबा'' और न पत्नी शब्द है, चाहे स्पष्ट करने के लिए NASB में डाला गया है। बतशेबा के साथ दाऊद के व्यभिचार और उसके पति उरिय्याह की हत्या की अगली योजना की कहानी नातान नबी की डांट की तरह ही लोगों में प्रसिद्ध है (2 शमूएल 11:1-12:15क)। इन परिस्थितियों के कारण दाऊद ने पश्चात्ताप किया, जिसके भजन संहिता 51 में व्यक्त किए जाने की अधिक सम्भावना है।

उनका पहला बच्चा चाहे मर गया, पर दाऊद और बतशेबा का एक दूसरा बेटा हुआ जिसका नाम सुलैमान था (2 शमूएल 12:15ख-25)। दाऊद की कई और पत्नियां और बच्चे भी थे जिनमें गद्दी के लिए लड़ने वाले बेटे भी हैं। इसलिए नातान नबी के साथ-साथ बतशेबा की कोशिश थी कि उसका पुत्र सुलैमान राजा बना (1 राजाओं 1:11-31)। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है कि बतशेबा ''परमेश्वर के उपाय के रहस्यमय कामों में, दाऊद के सिंहासन के वारिसों की जननी बन गई।''[17]

बतशेबा से दाऊद का नातान नामक एक और पुत्र था (2 शमूएल 5:14; 1 इतिहास 3:5)। लूका की वंशावली सुलैमान के बजाय यीशु की विरासत इस आदमी से जोड़ती है (लूका 3:31)।

आयत 7. सुलैमान आरम्भ में चाहे ''यहोवा से प्रेम करता था,'' परन्तु वह ''कई विदेशी स्त्रियों'' से प्रेम करने लगा, जिन्होंने उसे गुमराह कर दिया (1 राजाओं 3:3; 11:1-13)। सुलैमान की मूर्तिपूजा के कारण, इस्राएल का राज्य अन्त में बंट गया (1 राजाओं 11:26-40)।

सुलैमान के पुत्र **रहबाम** ने अपने पिता से भी कठोर शासन की नीति अपनाई और यारोबाम की अगुआई में उत्तरी गोत्रों ने विद्रोह कर दिया (1 राजाओं 12:1-24)। इसलिए वंशावली में रहबाम से यकुन्याह तक दिए गए राजाओं (1:7-11) ने केवल दक्षिण में यहूदा पर राज किया।

अपने पिता सुलैमान की तरह रहबाम पर मूर्ति पूजा का प्रभाव था। उसके लोगों ने ऊंचे स्थान, पवित्र लाठें, अश्शेरा के खम्भे और उनके धार्मिक अनुष्ठानों में पुरुष वेश्याओं को लाया। रहबाम के शासन के दौरान यहूदा में होने वाली बुराई को इस बात से कोष्ठक में रखा जाता है कि ''उसकी माता का नाम नामाह था जो अम्मोनी स्त्री थी'' (1 राजाओं 14:21-31)।

अबिय्याह जिसने कुछ वर्ष तक राज किया, अपने पिता रहबाम के पद-चिह्नों पर ही चला (1 राजाओं 15:1-8)। इसके विपरीत अबिय्याह के पुत्र आसा ने देश में से घृणित मूर्तियों को और पुरुष वेश्याओं को निकालकर वह किया, जो परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा था। उसने तो अपनी स्वयं की माता (या सम्भवतया नानी), माका को उसकी मूर्तिपूजा के कारण राजमाता के पद से उतार दिया (1 राजाओं 15:9-15)।

आयत 8. आसा का पुत्र **यहोशाफात** भी अपने पिता के पद-चिह्नों पर चलते हुए एक अच्छा राजा था। उसने इस्राएल के राजा के साथ सुलह की (1 राजाओं 22:41-44)। परन्तु उसके राज्य में भी लोग अभी तक ऊंचे स्थानों पर पूजा करते थे।

यहोशाफात का पुत्र **योराम** (यहोराम) धर्मी राजा नहीं था। उसने इस्राएल पर राज करने वाले बदनाम दुष्ट राजा अहाब की बेटी अतल्याह से विवाह किया (2 राजाओं 8:16-19)।

यहां पर मत्ती की वंशावली में एक और खाली जगह आती है (देखें 1:4, 5)। **योराम** और **उजिय्याह** (अजर्याह)[18] के बीच यहूदा में अजर्याह, योआश (यहोआश) और अमस्याह (1 इतिहास 3:11, 12; देखें 2 राजाओं 8:25-27; 12:1-21; 14:1-22) तीन अतिरिक्त राजा थे। अपने बेटे अहज्याह की मृत्यु के बाद दुष्ट राज माता अतल्याह ने सिंहासन पर कब्जा करने और दाऊद के राजवंश को नष्ट करने की कोशिश की (2 राजाओं 11)। परन्तु बालक योआश (अपने पोते) को बचा लिया गया और वह बाद में यहूदा के राजा के रूप में सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसे अपने शासन के दौरान मन्दिर की मरम्मत किए जाने के लिए याद किया जाता है (2 राजाओं 12)। योआश और उसके पुत्र अमस्याह दोनों को अच्छे राजाओं के रूप में याद किया जाता है (2 राजाओं 12:2; 14:1-3)।

आयत 9. उजिय्याह (अजर्याह) और उसके पुत्र योताम को भी ''जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था'' वही करने के कारण, सकारात्मक अर्थ में याद किया जाता है (2 राजाओं 15:3, 34)। परन्तु काफ़िर प्रभाव अभी भी था जिसमें यहूदा के गोत्र ऊंचे स्थानों पर पूजा करते थे (2 राजाओं 15:4, 35)। इसके अलावा घमण्ड के एक काम के कारण परमेश्वर ने उजिय्याह को कोढ़ से मारा, क्योंकि उसने मन्दिर में धूप जलाने की कोशिश की थी जिसका अधिकार केवल याजकों को था (2 इतिहास 26:16-21)।

योताम के पुत्र अहाज़ ने मूर्तियों की पूजा में शामिल होकर अपने पुत्र को भी आग में बलिदान किया जो परमेश्वर की दृष्टि में घिनौना था (2 राजाओं 16:1-4)! उसने दमिश्क में काफ़िर वेदी के नमूने के अनुसार मन्दिर के लिए एक नई वेदी बनाई थी। इसके अलावा उसने मन्दिर में और बदलाव भी किए जिनसे यह संकेत मिलता है कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करने

से बढ़कर अश्शूर के राजा को प्रसन्न करने का अधिक ध्यान करता था (2 राजाओं 16:10-20)।

ऊंचे स्थानों को गिरा देने, लाठों को तोड़ देने, अश्शेरा को काट देने और पीतल के उस सांप को जिसे मूर्ति के रूप में इस्तेमाल किया जाता था चूर-चूर कर देने के कारण अहाज़ का पुत्र हिज़कियाह परमेश्वर का वफ़ादार था (2 राजाओं 18:1-8)। वह इस्राएल को अश्शूरियों द्वारा बन्दी बनाकर ले जाने के समय 722 ई.पू. यहूदा पर शासन कर रहा था (2 राजाओं 18:9-12)। उसके थोड़ी देर बार परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म के द्वारा 1,85,000 अश्शूरियों को मृत्यु देकर हिज़कियाह और यरूशलेम के नगर के लोगों को ऐसी ही मृत्यु से बचा लिया (2 राजाओं 18:13-19:37)। घेराबन्दी को रोकने के लिए यरूशलेम में पानी की सुरंग बनाने के लिए हिज़कियाह को याद किया जाता (2 राजाओं 20:20)। वह सुरंग आज भी देखी जा सकती है।

आयत 10. हिज़कियाह के पुत्र **मनश्शिह** ने ऊंचे स्थानों को, बाल की वेदियों को और अश्शेरा के स्थानों को फिर से बनाकर परमेश्वर की दृष्टि में बुराई की। उसने यहोवा के मन्दिर में आकाश के सारे गणों की पूजा की और यहां तक कि अपने बेटे को आग में बलि भी किया (2 राजाओं 21:1-6)। राजा और लोगों की इन बुराइयों के कारण परमेश्वर ने यहूदा को दासता में भेज दिया (2 राजाओं 21:10-16)। मनश्शिह का पुत्र **आमोन** कोई बहुत अच्छा नहीं था; उसके सेवकों ने उसके विरुद्ध चाल चली और उसे मरवा डाला (2 राजाओं 21:19-24)।

आमोन का पुत्र **योशिय्याह** जो आठ वर्ष का होने पर राजा बन गया था उसमें अलग सोच थी। मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक मिलने के बाद योशिय्याह ने बहाली की एक लहर चलाई (2 राजाओं 22:1-23:25)। उसने लोगों के सामने व्यवस्था को पढ़वाया और परमेश्वर के साथ उनकी वाचा को फिर से बांधा। उसने काफ़िरों की कई चीज़ें (मूर्तियां, वेदियां, खम्भे, ऊंचे स्थान और बर्तन निकाल दिए) और लोगों (पुजारियों, पुरुष वेश्याओं, महूर्त देखने वालों और ओझों) को निकाल दिया।

आयत 11. योशिय्याह के शासन के दौरान हुए सकारात्मक परिवर्तनों के बावजूद परमेश्वर यहूदा पर अपना क्रोध गिराने का निश्चय कर लिया (2 राजाओं 23:26, 27)। मत्ती ने अपनी वंशावली में फिर से योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम (यहोयाकीम) को निकालकर एक पीढ़ी को फिर से छोड़ दिया (देखें 2 राजाओं 23:34-24:6; 1 इतिहास 3:15, 16)।[19] **यकुन्याह** (यहोयाकीन) का पुत्र **बाबुल में ले जाए जाने के समय** शासन कर रहा था। यह ''ले जाया जाना'' 597 ई.पू. में हुआ; उस समय अधिकतर शाही परिवार को बाबुल में ले जाया गया था (2 राजाओं 24:8-16)। **और उसके भाई** वाक्यांश वास्तविक भाइयों का संकेत हो सकता है (देखें 1:2) या ''देश के बड़े लोगों'' (2 राजाओं 24:15) को कहा गया हो सकता है।

यहां पर यकुन्याह के चाचा मत्तन्याह, जिसका नाम नबूकदनेस्सर राजा ने बदलकर सिदकिय्याह रख दिया था, को यहूदा की गद्दी पर बिठा दिया गया। उसने 586 ई.पू. में अन्त में नबूकदनेस्सर की सेना द्वारा यरूशलेम और इसके मन्दिर को नष्ट किए जाने तक ग्यारह साल तक राज किया। अपने विद्रोह के कारण, सिदकिय्याह ने अपनी आंखों के सामने अपने दो बेटों के मारे जाने को देखा; फिर उसकी आंखें निकाल ली गईं। सिदिकिय्याह और यहूदा के अधिकतर बचे हुए लोगों को बाबुल में ले जाया गया (2 राजाओं 24:17-25:21)।[20] उसका नाम मत्ती की वंशावली में नहीं था क्योंकि वह सीधे तौर पर मसीह के परिवार में नहीं था।

दाऊद के वारिस (1:12-16)

[12]बंदी होकर बाबुल पहुंचाए जाने के बाद यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ, और शालतिएल से जरुब्बाबिल उत्पन्न हुआ। [13]और जरुब्बाबिल से अबीहूद उत्पन्न हुआ और अबीहूद से इल्याकीम उत्पन्न हुआ और इल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ। [14]और अजोर से सदोक उत्पन्न हुआ और सदोक से अखीम उत्पन्न हुआ, और अखीम से इलीहूद उत्पन्न हुआ। [15]इलीहूद से इलियाजार उत्पन्न हुआ, और इलियाजार से मत्तान उत्पन्न हुआ, और मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। [16]याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ जो मरियम का पति था और मरियम से यीशु जो मसीह कहलाता है, उत्पन्न हुआ।

वंशावली के इस तीसरे भाग (1:12-16) में दाऊद के उन वारिसों का नाम हैं यकुन्याह ने यरूशलेम में उसकी गद्दी पर राज नहीं किया। लगभग छह सौ वर्षों का इतिहास बताते हुए यह यीशु मसीहा के जन्म में आकर समाप्त होती है।

आयत 12. वंशावली के पहले भाग से दूसरे में बदलने के लिए ''दाऊद'' का हवाला इस्तेमाल किए जाने की तरह (1:6क, 6ख) दूसरे भाग से तीसरे में जाने के लिए **यकुन्याह** और **बाबुल पहुंचाए जाने**; का इस्तेमाल किया गया है (1:11, 12; 1:17 पर टिप्पणियां देखें)। यहां ''निर्वासन का समय बीत जाने के बाद के नहीं, बल्कि आरम्भ के बाद के समय की बात'' है।[21]

मत्ती ने मसीह की वंशावली में यकुन्याह और उसकी सन्तान का नाम दिया। यह ध्यान देने वाली बात है कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह के मुख से कहा था, ''यहोवा यों कहता है कि इस पुरुष को निर्वंश लिखो, उसका जीवनकाल कुशल से न बीतेगा; और न उसके वंश में से कोई भाग्यवान होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान या यहूदा पर प्रभुता करने वाला होगा'' (यिर्मयाह 22:30)। मैक्गार्वे ने व्याख्या की, ''उसने केवल इस अर्थ में निरवंश होना था कि गद्दी पर बैठने के लिए उसका कोई पुत्र नहीं होना था।''[22]

इस बात से मेल खाते हुए यीशु यरूशलेम में गद्दी पर बैठकर सांसारिक राज्य पर हाकिम नहीं हो सकता था। वह आज स्वर्ग से दाऊद की गद्दी पर बैठा है (प्रेरितों 2:29-36)। उसका शासन पिन्तेकुस्त के दिन आरम्भ हुआ था जब उसकी कलीसिया/राज्य संसार में आया। आकाश के बादलों में लौटने पर यीशु राज्य को परमेश्वर पिता को सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:23-26; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17)।

यकुन्याह (''कैदी'') के सात पुत्रों का नाम पुराने नियम के वंशावली के विवरणों में दर्ज हैं और **शालतिएल** का नाम सबसे ऊपर है (1 इतिहास 3:17, 18)।[23] मसोरा के लेख (MT) में इतिहासकार ने ''पदायाह'' को **जरुब्बाबिल का पिता** (1 इतिहास 3:19) बताया है, परन्तु सप्तत्ति में ''शालतिएल'' है। यह बाद वाली बात और लेखों के साथ मेल खाती है (एज्रा 3:2, 8; नहेम्याह 12:1; हाग्गै 1:12, 14; 2:2, 23)। ''इन परम्पराओं को मिलाने के लिए कई सुझाव बढ़ाए गए हैं; उनमें से सभी जरुब्बाबिल को पदायाह का वास्तविक पुत्र बताकर उसे विधवा के साथ विवाह जैसे किसी कानूनी माध्यम से शालतिएल के साथ जोड़ते हैं'' (तुलना व्यवस्थाविवरण 25:5-10)।''[24] यह महत्वपूर्ण है कि लूका की वंशावली, जो मत्ती की सूची से ''दाऊद'' के फौरन बाद बदल जाती है, केवल फिर से अलग होने के लिए ''शालतिएल''

और ''जरुब्बाबिल'' पर जुड़ जाती है (लूका 3:27, 31)।

जरुब्बाबिल 538 ई.पू. में फारसी राजा कुस्त्रु के आदेश के बाद दासता से यरूशलेम में लौटने वाले यहूदियों में था (एज्रा 1:1-2:2)। परम्परागत ढंग से उसे ''शेशबस्सर नामक प्रधान'' (एज्रा 1:8) के रूप में पहचान देकर वापस आने वालों के अगुवे के रूप में माना जाता था। परन्तु हो सकता है कि शेशबस्सर और जरुब्बाबिल दो अलग-अलग व्यक्ति हों, जो जरुब्बाबिल को दूसरा ''यहूदा का हाकिम'' (हाग्गै 2:21) बना देगा। परमेश्वर की यहूदा की ''अंगूठी'' (हाग्गै 2:23), से राजा के होने और अधिकार का प्रतीक, से तुलना सम्भवतया दाऊद की रेखा के द्वारा मसीहा की प्रतिज्ञा पर फिर से ज़ोर देना है।[25]

आयतें 13-15. जरुब्बाबिल के बाद केवल नौ नाम पांच सौ वर्ष के लगभग समय में आते हैं: लगता नहीं कि इनमें हर पीढ़ी के दर्शाया गया है। **अबीहूद, इल्याकीम, अजोर, सदोक, अखीम, इलीहूद, इलियाजार, मत्तान** और **याकूब** इन लोगों के नाम पुराने नियम की वंशावलियों में नहीं हैं, क्योंकि यदि सारे नहीं तो इनमें से अधिकतर लोग दोनों नियमों के काल के बीच रहते थे। मत्ती ने वंशावली का यह लेखा-जोखा किसी अन्य स्रोत से लिया होगा। यहूदी इतिहासकार जोसेफस, जो एक याजकीय परिवार से था ने अपनी वंशावली को ''सरकारी दस्तावेज़ों में वर्णित'' बातों से लेकर साबित करते हुए अपनी जीवनी बताई।[26] यह हो सकता है कि यहूदी लोग भी दाऊद के शाही परिवार पर अधिक ध्यान देते हों। हो सकता है कि मत्ती ने अपनी जानकारी सरकारी दस्तावेजों से या यीशु के परिवार से ली हो। निश्चय ही यूसुफ़ अपने खानदान से परिचित था क्योंकि वह जनगणना में नाम लिखवाने के लिए मरियम को दाऊद के नगर बैतलहम में ले गया (लूका 2:1-7)।

आयत 16. यीशु की वंशावली के मत्ती के संस्करण में यीशु के सांसारिक पिता **यूसुफ** को **याकूब** नामक एक व्यक्ति का पुत्र बताया गया। लूका यूसुफ को एली (हेली) नामक आदमी का पुत्र बताता है (लूका 3:23)। इस काल्पनिक विसंगति को कैसे दूर किया जा सकता है? यह दिखाया गया है कि मत्ती की वंशावली में कई पीढ़ियों का अन्तर है, और इस अन्तर के होने का कारण यह हो सकता है। एक और सम्भावना है कि यूसुफ वास्तव में याकूब का पुत्र और मरियम के पिता एली का दामाद था। यह दो वंशावलियों के बीच अन्तरों को सुलझा देगा। इसके अलावा यह इन वंशावलियों पर पाए जाने वाले व्यापक विचार से भी सहमत होगा।[27] ऐसा होने पर यूसुफ और मरियम दोनों दाऊद के परिवार में से थे।

मत्ती यहां: यह *न* कहने के लिए चौकस था कि यूसुफ ''यीशु'' का पिता था। उसने ज़ोर देकर कहा कि यूसुफ **मरियम का पति** था और यह **यीशु** की माता थी। यह भाषा आश्चर्यकर्म के द्वारा गर्भधारण किए जाने और कुंवारी से जन्म की कहानी लिए रास्ता तैयार कर रही है (1:18-25)।

यीशु को **मसीहा** या ''ख्रिस्तुस'' कहा गया है। इस अन्तिम भाग में दाऊद के अन्य वारिसों ने चाहे (1:12-16) राजा के रूप में शासन नहीं किया, पर यीशु शासन करता है। परन्तु दाऊद की गद्दी पर उसका शासन आत्मिक है। वह एक अनन्त राज्य पर जो स्वर्ग में था राज करता है जो कभी नष्ट नहीं होगा (प्रेरितों 2:29-36; देखें दानिय्येल 2:44; 7:13, 14)।

सारांश (1:17)

[17]इस प्रकार अब्राहम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई, और दाऊद से बाबुल को बंदी होकर पहुंचाए जाने तक चौदह पीढ़ी, और बंदी होकर बाबुल को पहुंचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई।

आयत 17. यह आयत वंशावली के सारांश का काम करती है। यह आयत 1 को सामने लाते हुए वचन को कोष्ठक में रखती है। आयत 1 में दिए नामों का क्रम (''यीशु मसीहा,'' ''दाऊद,'' और ''अब्राहम'') आयत 17 में उलट हो जाता है (''अब्राहम,'' ''दाऊद,'' ''मसीहा'') इसके अलावा वंशावली को तीन भागों में बांटा गया है, जिसमें प्रत्येक में **चौदह पीढ़ियां** हैं:

1. **अब्राहम से दाऊद तक** (1:2-6क);
2. **दाऊद से बन्दी होकर बाबुल में ले जाए जाने तक** (1:6ख-11);
3. **बन्दी होकर बाबुल पहुंचाए जाने से मसीह तक** (1:12-16)।

अन्य कई विद्वानों के साथ जैक पी. लूईस ने सुझाव दिया है कि यह ''याद करना आसान रखने के लिए'' था।[28] इसके अलावा इस प्रबन्ध से यहूदी इतिहास के तीन कालों की समीक्षा भी मिलती है।

कइयों ने इस तथ्य में महत्व को देखा है कि दाऊद के नाम से मिलती-जुलती संख्या (इब्रानी भाषा के व्यंजनों के साथ इसका लिप्यंतरण ''DWD'' किया जाता है) चौदह है। (''D'' वर्णमाला का चौथा अक्षर है ''W'' छठा अक्षर है: 4+6+4=14.) लुईस ने इस विचार को व्यापक रूप में ''स्वीकार्य धारणा जिससे न प्रमाणित हो सकता है न इसे नकारा जा सकता है'' के रूप में बताया है।[29]

तीनों समूहों का संगठन, जिसमें प्रत्येक में चौदह पीढ़ियां हैं, दिखाता है कि मसीह के आने की तैयारी का समय सम्पूर्ण था (देखें गलातियों 4:4)। परन्तु अन्तिम भाग की गिनती करना कठिन है (1:12-16) जिसमें चौदह के बजाय केवल तेरह नाम मिलते हैं। इस समस्या को सुलझाने के लिए कई समाधान दिए जा चुके हैं, परन्तु उनमें से कोई भी पूरी तरह से सन्तोषजनक नहीं है।

एक समाधान यकुन्याह की गिनती करना है, जिसे दूसरे भाग में से आगे लिया गया है (1:11, 12)। तौभी दाऊद को पहले भाग से दूसरे भाग में ले जाया जाता है (1:6क, 6ख) और दूसरी बार उसे गिना नहीं जाता।

एक और समाधान चौदह की गिनती पूरी करने के लिए मरियम का नाम जोड़ना है। परन्तु वंशावली में अन्य किसी स्त्री का नाम नहीं गिना गया और यह मानना कठिन है कि मरियम यूसुफ से अलग पीढ़ी को दिखाती है, जिसके साथ उसका विवाह हुआ।

एक तीसरा प्रस्ताव यह है कि दूसरे भाग के अन्त में ''यकुन्याह'' को ''यहोयाकीम'' (या शायद ''एल्याकीम''; 2 राजाओं 23:34-24:6) पढ़ना चाहिए, और इस प्रकार यकुन्याह के नाम को तीसरे समूह में मिलाने से चौदह की गिनती पूरी हो जाएगी।[30] तौभी दो अलग अलग नामों के लिए वचन का प्रमाण इतना मज़बूत नहीं है। इसके अलावा यदि इस प्रस्ताव को मान भी लिया

जाए, तो वंशावली में प्रत्येक पुरुष के नाम को दोहराने की सुन्दरता भंग हो जाएगी।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

बेकार आयतें ? (1:1-17)

बाइबल के कई छात्र मत्ती 1:1–17 में पाई जाने वाली वंशावली पर चमक उठते हैं। आखिर सूची में दिए कुछ नाम प्रसिद्ध नहीं हैं और आम तौर पर उनके नामों का उच्चारण कठिन होता है। इसके बावजूद वंशावली में हमारे लिए आज कुछ महत्वपूर्ण सबक हैं।

1. परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को अपने समय पर पूरा करता है।
2. परमेश्वर अपने लोगों को उसके विरुद्ध विद्रोह करने पर दण्ड देता है।
3. परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए पापी लोगों को भी इस्तेमाल कर सकता है।
4. परमेश्वर किसी के माता–पिता के पापों को अपने विरुद्ध नहीं गिनता।
5. परमेश्वर का इस्राएल को स्थापित करने और बचाकर रखने का मुख्य उद्देश्य मसीह को संसार में लाना था।[31]

यीशु की वंशावली में स्त्रियां (1:1-17)

उन पांच स्त्रियों का इस्तेमाल करते हुए जिनके नाम मसीह की वंशावली में दिए गए हैं प्रवचन तैयार किया जा सकता है:

1. तामार–अपमानित की गई स्त्री (1:3; उत्पत्ति 38:6–30);
2. राहब–वेश्या जो विश्वासी बन गई (1:5; यहोशु 2:1–21);
3. रूत–वफ़ादार बहू (1:5; रूत 1–4);
4. बतशेबा–एक बेवफ़ा पत्नी (1:6; 2 शमूएल 11; 12);
5. मरियम–माता जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र के लिए चुना (1:16; देखें 1:18–25; 12:46–50; 1:26–56; 2:1–52; उत्पत्ति 2:1–11; 19:25–27)।[32]

टिप्पणियां

[1]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैकनाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 255 में डग्लस एस. हफमन, ''जेनियोलाजी।'' [2]मैक्रोबियुस *सैटरनेलिया* 2.4.11. [3]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 1.7.13. [4]इस विचार के साथ कठिनाइयों में यह तथ्य है कि यूसुफ का नाम दोनों विवरणों में और मरियम का नाम लूका की वंशावली में है। [5]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* भाग 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 35. [6]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1–13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 9. [7]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 6. [8]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 20. [9]हफमन, 255. [10]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंटी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 75.

[11]कई वंशावलियों में केवल पुरुषों के नाम हैं, परन्तु पुराने नियम में ऐसे उदाहरण हैं, जहां स्त्रियों के नाम भी हैं (उत्पत्ति 22:20-24; 25:1-6; 36:1-14; 1 इतिहास 1:32; 2:3, 4, 18-20, 24, 26, 46; 3:1-9)। कुछ मामलों में पिता की एक से अधिक पत्नी/रखैल होती थी, जिस कारण इन स्त्रियों का नाम पुत्रों को अलग करने के उद्देश्य से किया जाता था। [12]हफमन, 255-56. [13]लुईस, 39. [14]हफमन, 256. [15]रॉबर्ट एच. गुंड्री, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 15. [16]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री, एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गास्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 116. [17]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 16. [18]इस पर बहस चलती है कि ''उजिय्याह'' (ओज़ियास) से अभिप्राय कौन सा राजा है। कुछ लोग अहज्याह का पक्ष लेते हैं, परन्तु अजर्याह की सम्भावना अधिक है (देखें 2 राजाओं 14:21; 15:13, 30)। [19]एल्याकीयम का भाई यहोयाआज-जो मसीह के परिवार का भाग नहीं था-उससे पहले तीन महीने राज किया, परन्तु फिरौन-नको द्वारा उसे गद्दी से उतार दिया गया (2 राजाओं 23:31-33)। [20]चार अवसर थे जिन पर बन्दियों को यरूशलेम से बाबुल में ले जाया गया (दानिय्येल 1:1-7; यिर्मयाह 52:28-30): (1) 605 ई.पू. जब दानिय्येल को ले जाया गया, (2) 597 ई.पू. में जब यकुन्याह को ले जाया गया, (3) 586 ई.पू. में जब सिदकिय्याह को ले जाया गया और (4) 582 ई.पू. में हाकिम गदलिय्याह की हत्या किए जाने के बाद ले जाया गया।

[21]हैग्नर, 11. [22]मैक्गार्वे, 21. [23]नबूकदनेस्सर के शासन के समय से बाबुल के एक लेख में ''यहूदा के राजा के पांच पुत्रों'' सहित शाही घराने की सहायता के लिए अनाज की सूची दी गई है (जेम्स बी. प्रिचर्ड, संपा., *एशियंट नियर ईस्टर्न टैक्सट्स: रिलेटिंग टू द ओल्ड टैस्टामैंट,* 3रा संस्क. [प्रिंसटन, न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1969], 308)। [24]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:1193 में एच. जी. एम. विलियम्सन, ''जरुब्बाबिल।'' [25]इसके विपरीत परमेश्वर ने यकुन्याह (कोन्याह, यहोयाकीन) को बताया कि चाहे ''उसके [उसके] दायें हाथ में अंगूठी है,'' पर वह उसे उतार देगा (यिर्मयाह 22:24)। [26]जोसेफ़स *लाइफ* 1.1-6; देखें *अगेंस्ट अपियन* 1.7. [27]जैसा पहले कहा गया है कि कइयों का मानना है कि मत्ती 1 यूसुफ़ के खानदान को बताता है, जबकि लूका 3 मरियम के खानदान को। [28]लुईस, 36. [29]वही, 37. इस व्यवहार का तकनीकी नाम ''गेमत्रिया'' है। इसका इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य 13:17, में किया गया हो सकता है गेमत्रिया का एक स्पष्ट उदाहरण *बरनाबस* 9.8. में मिलता है। [30]देखें हैग्नर, 5-6.

[31]जैक विलहेम, ''द बाइबल'स यूज़लैस वर्सेस'' पर आधारित *RSVP* न्यूज़लैटर 49-12-80-12 (1980)। जैक विलहेल्म, पोस्ट बॉक्स 2222, फ्लोरेंस, अलाबामा 35630 से अनुमति लेकर छापा गया। [32]वही।